SARANGADHAR DAS

Sarangadhar Das, was a revolutionary, a scientist par excellence, a Parliamentarian and a prolific writer. He was popularly known as 'Gadjat Gandhi' for his role in the Prajamandal Movement in various Princely States of Odisha.

Born on 17th October 1886 at Harekrushnapur, Dhenkanal, Odisha, he did his matriculation from Dhenkanal Garh High School and B.Sc. from Ravenshaw College, Cuttack. For higher studies, he studied Chemistry at Tokyo Institute of Technology, Japan. He also studied Sugar Technology at the University of California, Berkeley. He left for heavenly abode on 18th September 1957.

Sarangadhar struggled hard after his father's death when he was 11. However, his mother encouraged him to pursue his studies. The aim of Sarangadhar was not to join in Government Service but to establish Industry. He had a dream, to make India an industrially developed country.

After completing his study, he planned to set up a sugar industry in Dhenkanal. But, the then king of Dhenkanal, Shankar Pratap wanted to exterminate the sugar factory, created all obstacles, and destroyed the factory. Sarangadhar's mission failed and he realized that it was impossible to develop industry in Dhenkanal without the abolition of the king's rule. So, he thought of a revolution and that was translated into the Gadjat Movement.

He established an institution,'Praja Samilani' and encouraged the local leaders to form the Prajamandal committee and to revolt against the king. The Movement spread in the nook and corner of the entire Dhenkanal Gadjat as well as in other parts of Odisha. Subsequently, he became one of the Vice Presidents of the All India Prajamandal Committee.

He had an active political career. In 1946, he was elected to the Provincial Legislative Council of Odisha (1946-1949) from Tirtol-Erasama constituency and India's Provincial Parliament where he presented strong arguments in favour of the merger of all Princely States with Odisha and demanded a responsible Government in all Princely States.

After independence, he resigned from the Congress Party to join the Socialist Party and was an active participant in the All-Orissa State's People's Movement. He was also the Chairman of the Socialist Party(Utkal, 1951-1952) as well as the Deputy Leader of the Praja Socialist Party (1952-1953). In the year 1951, he was elected Member of Parliament to Lok Sabha from Dhenkanal-west-Cuttack Joint Parliamentary Constituency.

He worked tirelessly for the uplitment of tribal groups and lower caste communities. He also served as a member of the Standing Committee of the All-India State's People's Conference (1939-1943) and a member of the All-India Congress Committee (1939-1945). He was elected President of the Orissa and Central Provinces States Regional Council (1946-1947).

Sarangadhar Das regularly wrote about various struggles of the masses in the journal 'Krushak'. Two of his published Works include 'The Development of Sugar Industry in India' and 'Bikaner-A Political & Economic Survey'.

Department of Posts is delighted to issue a Commemorative Postage Stamp on Sarangadhar Das known as Gadjat Gandhi and appreciates his contribution to social reformist ideas and value his important role in political world as well as in evolution of industries.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure /Cancellation Cachet	:	Smt. Neenu Gupta
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

डाक विभाग
Department of Posts

सारंगधर दास
SARANGADHAR DAS

विवरणिका BROCHURE

सारंगधर दास

सारंगधर दास एक क्रांतिकारी थे। उत्कृष्ट वैज्ञानिक और सांसद होने के साथ–साथ उन्होंने विपुल लेखन कार्य भी किया। उड़ीसा राज्य की विभिन्न रियासतों में प्रजामण्डल आन्दोलन में अपनी महती भूमिका के कारण वह 'गड़जात गांधी' के नाम से जाने जाते हैं।

सारंगधर दास का जन्म 17 अक्तूबर, 1886 को ओडिशा के हरिकृष्णपुर, ढेंकानाल में हुआ। उन्होंने मैट्रिक की पढ़ाई ढेंकानाल गढ़ हाई स्कूल से की और बी.एस.सी. की डिग्री रेवनशॉ कॉलेज कटक से प्राप्त करने के बाद वह उच्च शिक्षा के लिए टोक्यो इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जापान चले गए, जहां उन्होंने रसायन विज्ञान की शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने कैलिफॉर्निया विश्वविद्यालय, बर्कली से शुगर प्रौद्योगिकी का भी अध्ययन किया। 18 सितम्बर, 1957 को सारंगधर दास का निधन हो गया।

सारंगधर दास मात्र 11 वर्ष के थे, जब उनके पिता का देहांत हो गया। उसके बाद उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। तथापि, उनकी माता जी ने उन्हें पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। सारंगधर का लक्ष्य सरकारी सेवा में आना नहीं बल्कि उद्योग स्थापित करना था। उनका सपना था कि भारत औद्योगिक रूप से विकसित राष्ट्र बने।

पढ़ाई पूरी करने के बाद सारंगधर ने ढेंकानाल में चीनी उद्योग स्थापित करने की योजना बनाई। किन्तु ढेंकानाल के तत्कालीन राजा शंकर प्रताप उनकी चीनी की फैक्ट्री को नष्ट करना चाहते थे, अतः उन्होंने उनकी राह में तमाम बाधाएं खड़ी कीं और अंत में फैक्ट्री को बन्द करवाने में कामयाब रहे। सारंगधर का मिशन असफल रहा और उन्हें यह अहसास हुआ की जब तक ढेंकानाल की राजसत्ता को उखाड़कर नहीं फेंक दिया जाता तब तक वहां उद्योग स्थापित करना असंभव है। अतः उन्होंने एक आंदोलन खड़ा करने का निर्णय लिया और उनके इस निर्णय की परिणति 'गड़जात आन्दोलन' के रूप में हुई।

उन्होंने 'प्रजा सम्मिलनी' नामक संस्था की स्थापना की और स्थानीय नेताओं को प्रजामण्डल समिति बनाने तथा राजा के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रोत्साहित किया। धीरे–धीरे यह आन्दोलन, संपूर्ण ढेंकानाल गड़जात के कोने–कोने से होकर उड़ीसा के अन्य क्षेत्रों में भी फैल गया। तत्पश्चात, सारंगधर दास, अखिल भारतीय प्रजामण्डल समिति के उपाध्यक्ष बने।

सारंगधर दास, राजनीति में भी अत्यंत सक्रिय रहे। वर्ष 1946 में वे तिरतोल इरसमा निर्वाचन क्षेत्र से उड़ीसा की प्रांतीय विधान परिषद (1946–1949) और भारत की प्रांतीय संसद के लिए निर्वाचित हुए, जहां उन्होंने सभी रियासतों के उड़ीसा राज्य में विलय के पक्ष में मजबूती से अपनी बात रखी और सभी रियासतों में जवाबदेह सरकार की मांग की।

स्वतंत्रता के पश्चात, सारंगधर ने कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र दे दिया और सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हो गए। उन्होंने 'ऑल–उड़ीसा स्टेट्स पीपल्स मूवमेंट' में सक्रिय भागीदारी की। वे सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष (उत्कल, 1951–1952) और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के उपाध्यक्ष (1952–1953) भी रहे। वर्ष 1951 में वे ढेंकानाल–पश्चिम–कटक संयुक्त संसदीय क्षेत्र से लोकसभा सदस्य चुने गए।

सारंगधर दास ने जनजातीय समूहों और समाज के वंचित वर्गों के उत्थान के लिए अथक कार्य किया। वे, ऑल इंडिया स्टेट्स पीपल्स कॉन्फ्रेंस की स्थाई समिति (1939–1943) और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (1939–1945) के सदस्य भी रहे। इसके अलावा, वे ओडिशा और सेंट्रल प्रोविन्सेस स्टेट्स रीजनल काउन्सिल के निर्वाचित अध्यक्ष (1946–1947) भी थे।

सारंगधर दास ने आमजन के तमाम संघर्षों के बारे में 'कृषक' पत्रिका में नियमित रूप से लिखा। 'भारत में चीनी उद्योग का विकास' और 'बीकानेर–एक राजनीतिक और आर्थिक सर्वेक्षण' नाम से उनकी दो पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं हैं।

डाक विभाग, गड़जात गांधी के नाम से लोकप्रिय सारंगधर दास पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है, जिन्होंने समाज सुधार संबंधी अपने विचारों को धरातल पर उतारने के साथ–साथ राजनीतिक एवं उद्योग जगत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आभार:–

डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान किए गए। पाठ से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य Denomination	: :	500 पैसे 500 p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: :	201600 201600
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http:/www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार । डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5-00